नवभारत
जबलपुर, शनिवार, 24 जनवरी 2026

सुविचार– अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

ईमानदार लकड़हारे की सीख

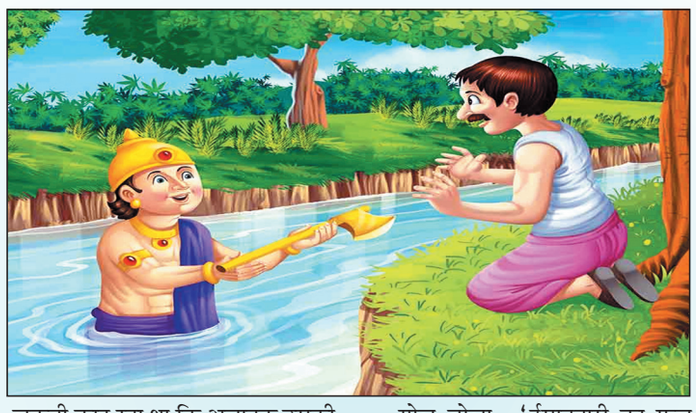

बहुत समय पहले की बात है, एक छोटे से हरे-भरे गाँव में एक नन्हा सा लड़का रहता था, जिसका नाम गोलू था. गोलू बहुत चंचल, जिज्ञासु और शरारती था. उसकी सबसे पसंदीदा जगह थी अपने घर का आंगन, जहाँ हर शाम नीम के पेड़ के नीचे उसकी दादी खाट बिछाकर बैठती थीं और दादाजी पास में हुक्का गुड़गुड़ाते हुए बच्चों को कहानियाँ सुनाया करते थे. गाँव के सारे बच्चे वहाँ इकट्ठा हो जाते, क्योंकि दादी-दादा की कहानियों में जादू होता था—ऐसा जादू जो मन को छू जाता और दिल में कोई न कोई सीख छोड़ जाता.

उस दिन भी सूरज ढल रहा था, चिड़ियाँ अपने घोंसलों की ओर लौट रही थीं और ठंडी हवा बहने लगी थी. दादी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'आज मैं तुम्हें एक ऐसी कहानी सुनाऊँगी, जो तुम्हें पूरी ज़िंदगी याद रहेगी.' गोलू ध्यान से दादी के पास बैठ गया. दादी ने कहानी शुरू की—कभी इसी गाँव के पास एक जंगल हुआ करता था, जिसमें एक ईमानदार लकड़हारा रहता था. वह रोज़ सुबह जल्दी उठकर जंगल जाता, लकड़ी काटता और उसे बेचकर अपने परिवार का पेट पालता. वह बहुत गरीब था, लेकिन कभी किसी का हक नहीं मारता था.

एक दिन लकड़हारा नदी के किनारे लकड़ी काट रहा था कि अचानक उसकी कुल्हाड़ी हाथ से फिसलकर नदी में गिर गई. वह बहुत दुखी हुआ और रोने लगा, क्योंकि वही उसकी रोज़ी-रोटी का साधन थी. तभी नदी से एक चमकदार परी निकली और बोली, 'तुम क्यों रो रहे हो?' लकड़हारे ने सच-सच सारी बात बता दी. परी पहले सोने की कुल्हाड़ी लेकर आई, फिर चाँदी की, लेकिन लकड़हारे ने कहा, 'यह मेरी नहीं है.' अंत में जब लोहे की कुल्हाड़ी आई तो उसने खुशी से कहा, 'यह मेरी है.' उसकी ईमानदारी से खुश होकर परी ने तीनों कुल्हाड़ियाँ उसे दे दीं. दादी ने कहानी रोककर गोलू से पूछा, 'बेटा, इस कहानी से क्या सीख मिलती है?'

गोलू बोला, 'ईमानदारी का फल मीठा होता है.' दादी मुस्कुरा दीं और कहानी आगे बढ़ाई. उन्होंने बताया कि उसी जंगल में एक लालची व्यापारी भी रहता था, जिसने लकड़हारे की कहानी सुनकर लालच में आकर अपनी कुल्हाड़ी खुद नदी में फेंक दी. जब परी आई और सोने की कुल्हाड़ी दिखाई, तो वह झट से बोला, 'यही मेरी है.' परी उसके झूठ और लालच से नाराज़ हो गई और उसे कुछ भी नहीं दिया.

दादी ने धीरे से कहा, 'देखो बच्चों, लालच इंसान को खाली हाथ कर देता है.' गोलू यह सब बड़े ध्यान से सुन रहा था. तभी दादाजी बोले, 'कहानी सिर्फ सुनने के लिए नहीं होती, जीने के लिए होती है.' फिर उन्होंने अपनी एक बात साझा की—जब वे छोटे थे, तो एक बार रास्ते में उन्हें पैसे मिले थे, लेकिन उन्होंने वह पैसे उनके मालिक को लौटा दिए थे, और उसी ईमानदारी की वजह से उन्हें गाँव में सम्मान मिला. रात गहराने लगी थी, आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे और बच्चे कहानी सुनकर खुश थे. गोलू ने दादी का हाथ पकड़कर कहा, 'दादी, मैं भी हमेशा सच बोलूँगा और कभी लालच नहीं करूँगा.' दादी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, 'बस यही तो हम चाहते हैं.'

बच्चे अपने-अपने घर चले गए, लेकिन दादी-दादा की कहानी उनके दिलों में बस गई. गोलू उस रात सोते वक्त भी यही सोच रहा था कि अगर वह ईमानदार रहेगा, मेहनत करेगा और बड़ों की बात मानेगा, तो ज़िंदगी में कभी खाली हाथ नहीं रहेगा. और सच में, वह कहानी सिर्फ एक कहानी नहीं थी, बल्कि जीवन की राह दिखाने वाली रोशनी थी, जो दादी-दादा की आवाज़ में पीढ़ियों तक चलती रहती है.

सीख

ईमानदारी और सच्चाई हमेशा जीतती है, जबकि लालच इंसान को नुकसान पहुँचाता है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर:– 1. लड़की के पीछे रखी पीली किताब, 2. लड़के की बटन, 3. बैंचार पर लगा पेंट, 4. नीचे रखा हुआ बुश, 5. पेंट के डब्बे में रखा बुश, 6. नीचे रखा कलर ट्यूब की दिशा अलग, 6. लड़की के फ्राक की डिजाइन.

कविता

पढ़ाई और मेहनत का महत्व

पढ़ाई से ही खुलते हैं नए द्वार,
ज्ञान की रोशनी करती
जीवन को तैयार.
हर रोज़ मेहनत करो
मन लगाकर,
सपनों को पाओगे
सच्चाई से जोड़कर.

किताबों में छुपा है ज्ञान
का खजाना,
समय बर्बाद न करो,
यही है ठाना.
मेहनत और पढ़ाई है
सबसे बड़ा धन,
जो इसे अपनाए, वही
है सबसे महान.

भूल भुलैया

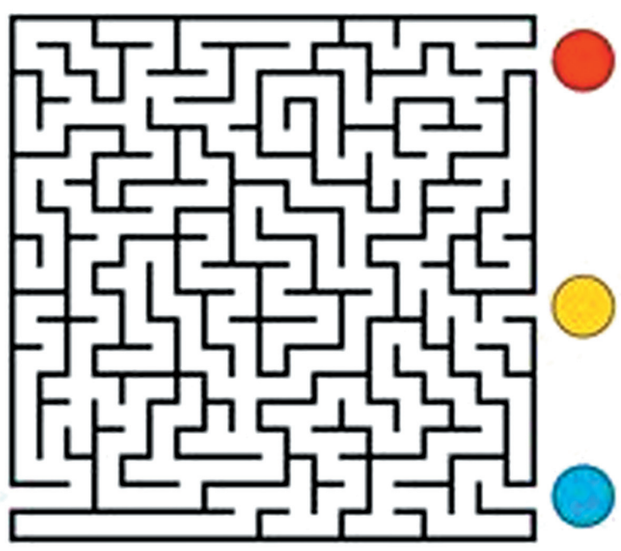

रंग भरो

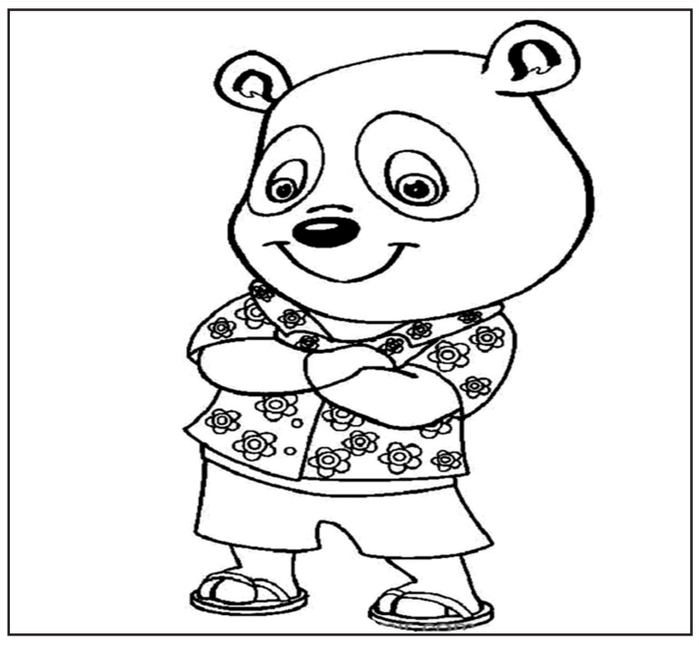

बिंदु मिलाओ

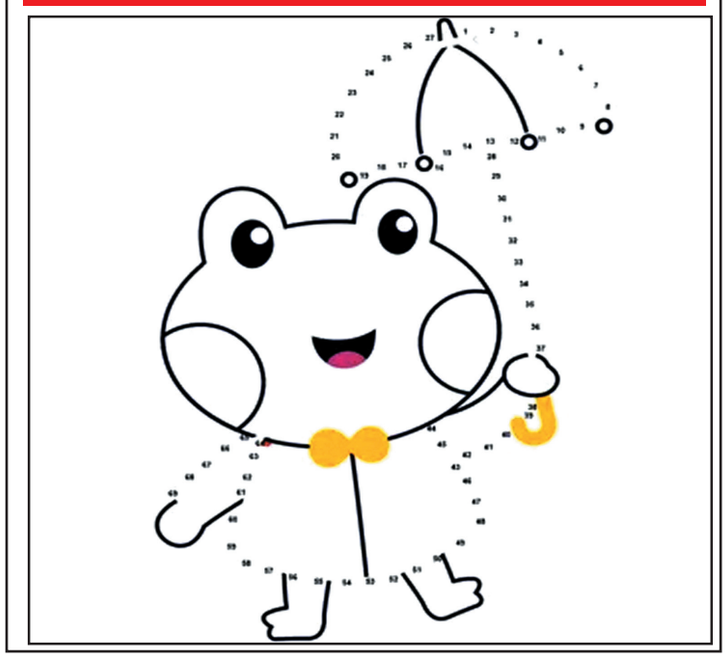

जानकारी

चंद्रयान : भारत की चाँद पर उड़ान

भारत के अंतरिक्ष विज्ञान में चंद्रयान मिशन एक बड़ी उपलब्धि है. चंद्रयान का मतलब है 'चाँद का वाहन'. इसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, यानी इसरो ने बनाया है. इसका मुख्य उद्देश्य चाँद के बारे में जानकारी जुटाना और अंतरिक्ष विज्ञान में भारत को आगे बढ़ाना है. चंद्रयान मिशन से हम चाँद की सतह, मिट्टी, खनिज और पानी के छोटे-छोटे अंशों का अध्ययन कर सकते हैं.

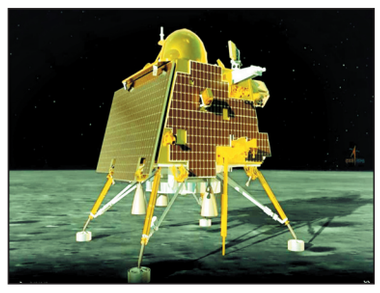

भारत ने अब तक दो मुख्य चंद्रयान मिशन भेजे हैं. पहला मिशन चंद्रयान-1 था, जो 2008 में लॉन्च हुआ. यह भारत का पहला चाँद मिशन था और यह पूरी दुनिया में भारत की वैज्ञानिक क्षमता को दिखाने वाला मिशन बन गया. चंद्रयान-1 ने चाँद पर पानी की उपस्थिति का पता लगाया, जो अंतरिक्ष और भविष्य की मानव यात्रा के लिए बहुत महत्वपूर्ण था. इस मिशन ने चाँद की सतह की उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें भी भेजी.

दूसरा मिशन चंद्रयान-2 था, जो 2019 में लॉन्च हुआ. इसमें ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर थे. ऑर्बिटर अभी भी चाँद के चारों ओर घूम रहा है और लगातार डेटा भेज रहा है. इसका रोवर 'प्रज्ञान' चाँद की सतह पर चलकर मिट्टी और चट्टानों का अध्ययन करने वाला था. हालांकि लैंडर को चाँद पर सॉफ्ट लैंडिंग में थोड़ा चुनौतीपूर्ण समय आया, लेकिन मिशन पूरी तरह से सफल रहा क्योंकि ऑर्बिटर ने बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारी भेजी.

चंद्रयान मिशनों से बच्चों और वैज्ञानिकों को चाँद के बारे में नई बातें सीखने का मौका मिला है. हमने जाना कि चाँद पर पानी के अंश हैं, वहां की मिट्टी किस प्रकार की है और चाँद के वातावरण में बहुत कम ऑक्सीजन होती है. ये जानकारी भविष्य में मानव मिशन और चाँद पर बसेरा बनाने में मदद करेगी.

चंद्रयान मिशन ने भारत को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष विज्ञान में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है. यह मिशन हमें यह सिखाता है कि कठिन परिश्रम, विज्ञान और लगन से कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है. बच्चों के लिए यह प्रेरणा का स्रोत है कि अगर हम सीखने और खोजने की जिज्ञासा बनाए रखें, तो हम अंतरिक्ष जैसी अद्भुत चीज़ों को भी समझ सकते हैं.

भारत के चंद्रयान मिशन ने न केवल देश का नाम रोशन किया है, बल्कि हमें यह भी सिखाया कि बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने की कोशिश करने वाले हमेशा सफल होते हैं.

तिरंगे से जुड़े रोचक तथ्य

- तिरंगे में केसरिया रंग साहस और बलिदान का प्रतीक है.
- सफेद रंग शांति और सत्य का प्रतीक है.
- हरा रंग धरती, कृषि और समृद्धि का प्रतीक है.
- तिरंगे के बीच में नीला अशोक चक्र है, जिसमें 24 धारियाँ हैं.
- अशोक चक्र धर्म और जीवन की निरंतर गति दर्शाता है.
- भारत का आधिकारिक तिरंगा 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया.
- स्वतंत्रता आंदोलन में तिरंगा पहली बार 1906 में कोलकाता में फहराया गया.
- शुरुआती तिरंगे में पीला रंग था, बाद में इसे केसरिया में बदला गया.
- तिरंगे को कभी जमीन पर नहीं गिराया जाता और इसे सम्मान से रखा जाता है.
- तिरंगा झंडा भारतवासियों के स्वाभिमान और देशभक्ति का प्रतीक है.

प्रेरक प्रसंग

राजा राम मोहन राय भारतीय समाज के एक महान सुधारक थे जिन्होंने समाज में कई बुरी प्रथाओं और अंधविश्वास के खिलाफ आवाज उठाई. उन्होंने देखा कि उस समय समाज में कई ऐसी प्रथाएँ चल रही थीं जो लोगों के लिए नुकसानदेह और गलत थीं. सबसे बड़ा काम उन्होंने सती प्रथा को बंद करवाने का किया, जिसमें विधवाओं को उनके पति के शव के साथ जला दिया जाता था. राजा राम मोहन राय ने इसे रोकने के लिए लोगों को समझाया, आंदोलन किया और अंग्रेज सरकार के सामने इसे कानून के जरिए खत्म करने की बात रखी. उनके प्रयासों से 1829 में यह प्रथा बंद हो गई.

ईमानदारी और शिक्षा के राजा राम मोहन राय

इसके अलावा उन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया. उस समय लड़कियों को स्कूल भेजा नहीं जाता था, लेकिन राजा राम मोहन राय ने कई स्कूल खोले और समाज को बताया कि लड़कियों को पढ़ाई का उतना ही अधिकार होना चाहिए जितना लड़कों को. उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा से लोग अपने जीवन में सही और गलत का फर्क समझ सकते हैं और समाज में बदलाव ला सकते हैं. राजा राम मोहन राय ने 1828 में ब्राह्म समाज की स्थापना की.

इस समाज का उद्देश्य था लोगों को अंधविश्वास, रूढ़िवाद और अन्य गलत प्रथाओं से बाहर निकालना और उन्हें तर्कसंगत सोच, धर्म में सुधार और सामाजिक बदलाव के महत्व के बारे में बताना. उन्होंने हमेशा कहा कि सभी धर्म समान हैं और किसी को किसी से बड़ा या छोटा नहीं समझना चाहिए. उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं और प्रेस के माध्यम से लोगों को जागरूक किया और समाज में सुधार की बातें लिखीं.

वे जातिवाद, भेदभाव और अन्य बुराइयों के खिलाफ भी आवाज उठाते रहे. राजा राम मोहन राय के कामों की वजह से समाज में समानता, शिक्षा और सुधार की महत्वपूर्ण बातें फैल सकीं. उन्होंने यह सिखाया कि अगर हम सोच और ज्ञान का

इस्तेमाल करें, तो समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है. उनके प्रयासों ने भारतीय समाज को आधुनिक और प्रगतिशील बनाने में मदद की और आज भी बच्चों और बड़ों के लिए यह प्रेरणा का स्रोत हैं.

उनका जीवन यह साबित करता है कि सच्चाई, ईमानदारी और शिक्षा से समाज में हमेशा सुधार हो सकता है और हर व्यक्ति के लिए बेहतर जीवन सुनिश्चित किया जा सकता है.

बूझो तो जानें

- मेरा नाम पाँच अक्षरों का है, मैं सुबह आती हूँ और रात में जाती हूँ. बताओ मैं कौन हूँ?
  उत्तर: सूरज
- सबको मैं देता हूँ खुशियाँ, मेरे बिना सब कुछ सूना है. बताओ मैं कौन हूँ?
  उत्तर: पानी
- मैं न जमीन हूँ, न आसमान, फिर भी ऊपर से नीचे उतरता हूँ बिना थकान.
  उत्तर: बारिश
- मैं सफेद हूँ, मीठा हूँ, सब बच्चे मुझे बहुत पसंद करते हैं.
  उत्तर: दूध
- मैं चलता हूँ बिना पैरों के, बोलता हूँ बिना मुँह के.
  उत्तर: घड़ी
- मेरा रंग हरा है, मैं खेतों में रहता हूँ, मुझे काटो तो स्वाद आता है.
  उत्तर: गेहूँ
- दिन में सोता हूँ, रात में जागता हूँ, अंधेरे में चमकता हूँ, और आसमान में रहता हूँ.
  उत्तर: तारा
- मैं चलता हूँ बिना पाँव के, पीला हूँ और गर्मी लाता हूँ.
  उत्तर: सूरज की रोशनी

हंसी-ठिठोली

- पप्पू डॉक्टर के पास गया.
  डॉक्टर: 'क्यों आए हो?'
  पप्पू: 'डॉक्टर साहब, मैं भूलने लगा हूँ.'
  डॉक्टर: 'कब से?'
  पप्पू: 'कब से क्या?'
- टीचर: 'तुम्हारे घर में बिजली कैसे आती है?'
  बच्चा: 'सर, सॉकेट से.' टीचर: 'और?'
  बच्चा: 'बस यही और क्या?'
- मम्मी: 'अगर तुम अच्छे बच्चे बनोगे तो तुम्हें चॉकलेट दूँगी.'
  बच्चा: 'अगर मैं बुरा बच्चा बनूँ तो?'
  मम्मी: 'तो तुम्हें वही मिलेगा जो बुरे बच्चे को मिलता है... मार!'
- पप्पू: 'टीचर, मैं स्कूल क्यों आता हूँ?'
  टीचर: 'ताकि तुम पढ़ सको.'
  पप्पू: 'अगर मैं पढ़ना ही नहीं चाहता तो?'
  टीचर: 'तो घर बैठो, पर पढ़ाई होगी!'
- बच्चा अपने दोस्त से: 'मुझे पता है मैं सुपरहीरो हूँ.'
  दोस्त: 'कैसे?'
  बच्चा: 'क्योंकि मम्मी कहती है, 'तुम अपने कमरे की चीजें तुरंत गायब कर देते हो.''
- बबलू डॉक्टर के पास गया.
  डॉक्टर: 'तुम्हें किस चीज़ से एलर्जी है?'
  बबलू: 'होमवर्क से!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**